IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 1 of 46 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

एमएसओई-004

(हिन्दी माध्यम)

FROM PREVIOUS YEAR PAPER's

IMPORTANT QUESTION ANSWER's

Guess Paper / Exam Notes

By India's No.1 - Mother Publication

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 46 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

खंड—I

20 अंकों के प्रश्न - प्रत्येक 500-600 शब्द

प्रश्न - "शहरों में गरीब लोग कई तरह की वंचनाओं से पीड़ित हैं।" चर्चा करें।

उत्तर- **शहरों में गरीब लोग कई तरह की कमी से जूझ रहे हैं**

शहरी गरीबी आज के समाज की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन गई है। जहाँ शहरों को अक्सर आर्थिक मौकों, बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवाओं तक पहुँच से जोड़ा जाता है, वहीं शहरी गरीबों को अक्सर कई तरह की कमियों का सामना करना पड़ता है जो उनकी भलाई में रुकावट डालती हैं और गरीबी से बाहर निकलने की उनकी क्षमता को कम करती हैं। ये कमियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं और घर, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोज़गार और सामाजिक सुरक्षा जैसे कई पहलुओं में दिखाई देती हैं।

आवास और आश्रय का अभाव

शहरी गरीबों में कमी का सबसे साफ़ तरीका है, उनके पास घर का ठीक से न होना। कई झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले और दूसरी जगहों पर बसे लोग बहुत ज़्यादा भीड़-भाड़ वाली, असुरक्षित और गंदी जगहों पर रहते हैं। इन बस्तियों में अक्सर पीने का साफ़ पानी, सही सफ़ाई और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी होती है। घर का असुरक्षित होना उन्हें घर से निकाले जाने के खतरों के लिए भी ज़िम्मेदार बनाता है, जिससे उनके घरों में लंबे समय तक टिके रहना और इन्वेस्ट करना मुश्किल हो जाता है। घरों की खराब हालत सीधे सेहत और सुरक्षा पर असर डालती है, जिससे बीमारियों और हादसों का खतरा बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य और स्वच्छता का अभाव

शहरी गरीबों के सामने एक और बड़ी चुनौती हेल्थ की कमी है। सस्ती हेल्थकेयर तक पहुंच की कमी, खराब न्यूट्रिशन और गंदे रहने के हालात के साथ, टीबी, हैजा और सांस के इन्फेक्शन जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। शहरी झुग्गी-झोपड़ियों में अक्सर पब्लिक हेल्थ सर्विस तक पहुंच कम होती है, और ज़्यादातर कम इनकम वाले परिवारों के लिए प्राइवेट हेल्थकेयर अफ़ोर्डेबल नहीं रहता है। इसके अलावा, खराब सफाई और प्रदूषित माहौल हेल्थ रिस्क को बढ़ाते हैं, जिससे बीमारी और गरीबी का एक चक्र बनता है।

शिक्षा और कौशल का अभाव

शिक्षा गरीबी से बाहर निकलने का एक मुख्य रास्ता है, फिर भी शहरी गरीबों को अक्सर पढ़ाई-लिखाई में कमी का सामना करना पड़ता है। कम आय वाले परिवारों के बच्चों को ज़्यादा स्कूल फीस, ट्रांसपोर्ट की कमी और बाल मजदूरी करके घर की आमदनी में योगदान देने जैसी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसका नतीजा यह होता है कि स्कूल छोड़ने वालों की दर ज़्यादा होती है और अच्छी शिक्षा तक उनकी

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 46 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

पहुँच कम हो जाती है। स्किल डेवलपमेंट के मौकों की कमी से फॉर्मल सेक्टर में उनकी नौकरी पाने की संभावना और कम हो जाती है, जिससे कई लोगों को कम सैलरी वाली इनफॉर्मल नौकरियों पर निर्भर रहना पड़ता है, जहाँ उन्हें बहुत कम सुरक्षा या सोशल प्रोटेक्शन मिलता है।

रोज़गार और आर्थिक अभाव

रोज़गार की कमी शहरी गरीबी का एक बड़ा पहलू है। कई शहरी गरीब लोग कंस्ट्रक्शन, घरेलू काम, रेहड़ी-पटरी पर सामान बेचने और दिहाड़ी मज़दूरी जैसे इनफॉर्मल सेक्टर में काम करते हैं। ये काम अक्सर अनियमित, कम पैसे वाले होते हैं, और इनमें हेल्थ इंश्योरेंस, पेंशन या पेड छुट्टी जैसे सोशल सिक्योरिटी बेनिफिट नहीं होते हैं। यह आर्थिक कमज़ोरी परिवारों को लंबे समय की ज़रूरतों के लिए प्लानिंग करने से रोकती है और उन्हें बीमारी, बेरोज़गारी या महंगाई जैसे झटकों का सामना करना पड़ता है।

सामाजिक और राजनीतिक अभाव

शहरी गरीबों को अक्सर फैसले लेने की उन प्रक्रियाओं से बाहर रखा जाता है जो उनकी ज़िंदगी पर असर डालती हैं। कानूनी सेवाओं, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और शहरी शासन के ढांचों तक उनकी पहुँच सीमित होती है। अलग-थलग किए जाने से उनके अधिकारों का दावा करने या नागरिक जीवन में हिस्सा लेने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे सामाजिक असमानता और बहिष्कार और मज़बूत होता है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, शहरी गरीबी कई तरह की होती है, और शहरों में गरीब लोग घर, हेल्थ, शिक्षा, नौकरी और सामाजिक हिस्सेदारी में एक-दूसरे से जुड़ी कमी से जूझते हैं। शहरी गरीबी को दूर करने के लिए ऐसी मिली-जुली पॉलिसी की ज़रूरत है जो हाउसिंग सुधार, आसान हेल्थकेयर, अच्छी शिक्षा, स्किल डेवलपमेंट और सबको साथ लेकर चलने वाले शासन को एक साथ जोड़ें। इन कई कमियों को एक साथ दूर किए बिना, शहरी गरीबों के रहने के हालात को बेहतर बनाने की कोशिशें अधूरी और टिकाऊ नहीं रह सकतीं।

प्रश्न - अविकसितता के अध्ययन के लिए निर्भरता दृष्टिकोण की जांच करें।

ANS.- डिपेंडेंसी अप्रोच 1960 और 1970 के दशक में पारंपरिक मॉडर्नाइज़ेशन थ्योरी की आलोचना के तौर पर सामने आया, जिसमें कहा गया था कि कम विकसित देश , विकसित देशों के रास्ते पर चलकर विकास कर सकते हैं। डिपेंडेंसी थ्योरिस्ट ने तर्क दिया कि कम विकास सिर्फ़ विकास की प्रक्रिया का एक स्टेज नहीं है, बल्कि यह देशों के बीच ऐतिहासिक और आर्थिक रिश्तों के ज़रिए स्ट्रक्चरल रूप से बनता और बना रहता है। यह अप्रोच असमान आर्थिक रिश्तों के ग्लोबल सिस्टम पर ज़ोर देता है, और यह दिखाता है कि कैसे अमीर देशों का विकास अक्सर गरीब देशों के कम विकास पर निर्भर करता है।

ऐतिहासिक संदर्भ और उत्पत्ति

राउल जैसे स्कॉलर्स के काम में। प्रेबिश , फर्नांडो हेनरिक कार्डोसो, और आंद्रे गुंडर फ्रैंक। इन विचारकों ने लैटिन अमेरिकी देशों की आर्थिक हालत का एनालिसिस किया और देखा कि इंडस्ट्रियल पॉलिसी और विदेशी मदद अपनाने के बावजूद, ये देश अंडरडेवलप्ड रहे। उन्होंने अंडरडेवलपमेंट की शुरुआत कोलोनियलिज़्म से की, और तर्क दिया कि बाहरी इकॉनमी के वर्ल्ड कैपिटलिस्ट सिस्टम में इंटीग्रेशन ने गैर-बराबरी को बनाए रखा। कोलोनियल ताकतों ने कोलोनियल सेंटर्स की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए रिसोर्स निकाले और लोकल इकॉनमी को बनाया, जिससे ये इलाके बाहरी मार्केट और टेक्नोलॉजी पर डिपेंडेंट हो गए।

मूल अवधारणाएँ

डिपेंडेंसी अप्रोच का सेंट्रल आइडिया **सेंटर-पेरिफेरी रिलेशनशिप है** , जो यह मानता है कि ग्लोबल इकॉनमी डेवलप्ड "कोर" देशों और अंडरडेवलप्ड "पेरिफेरल" देशों में बंटी हुई है। कोर को टेक्नोलॉजी में तरक्की, कैपिटल जमा करने और मार्केट कंट्रोल से फायदा होता है, जबकि पेरिफेरी का इस्तेमाल कच्चे माल, सस्ते लेबर और कोर से सरप्लस सामान के मार्केट के तौर पर किया जाता है। यह रिलेशनशिप एक-दूसरे को मजबूत करता है: कोर की दौलत पेरिफेरी की गरीबी पर निर्भर करती है, और पेरिफेरल देश डिपेंडेंसी के चक्कर में फंसे रहते हैं।

एक और खास कॉन्सेप्ट है **स्ट्रक्चरल डिस्टॉर्शन** , जिसका मतलब है कि आस-पास के देशों में इकोनॉमिक स्ट्रक्चर को लोकल ज़रूरतों के बजाय ग्लोबल इकोनॉमी की मांगों को पूरा करने के लिए कैसे बनाया जाता है। उदाहरण के लिए, कैश क्रॉप्स का मोनोकल्चर प्रोडक्शन या एक्सपोर्ट के लिए रिसोर्स निकालना मल्टीनेशनल कॉर्पोरेशन्स के लिए पैसा तो पैदा कर सकता है, लेकिन लोकल आबादी को मार्केट के उतार-चढ़ाव और इकोनॉमिक झटकों के प्रति कमज़ोर बना देता है। डिपेंडेंसी थ्योरिस्ट का तर्क है कि अंडरडेवलपमेंट कोई अंदरूनी कमी नहीं है, बल्कि बाहरी शोषण और वर्ल्ड सिस्टम में असमान इंटीग्रेशन का नतीजा है।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 46 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

नीतिगत निहितार्थ

डिपेंडेंसी अप्रोच ने कई देशों में डेवलपमेंट स्ट्रेटेजी पर असर डाला। जानकारों ने सुझाव दिया कि बाहरी देशों को विदेशी कैपिटल पर डिपेंडेंस कम करनी चाहिए, अपनी इकॉनमी में डाइवर्सिटी लानी चाहिए, और कोर देशों पर डिपेंडेंसी कम करने के लिए इंपोर्ट-सब्सिट्यूट इंडस्ट्रियलाइज़ेशन (ISI) स्ट्रेटेजी अपनानी चाहिए। इन पॉलिसी का मकसद घरेलू इंडस्ट्री को मज़बूत करना, विदेशी इन्वेस्टमेंट को कंट्रोल करना और ज़्यादा इकॉनमिक ऑटोनॉमी हासिल करना था। हालांकि, डिपेंडेंसी थ्योरी की आलोचना करने वालों का कहना है कि यह बाहरी फैक्टर्स पर ज़्यादा ज़ोर देता है और डेवलपमेंट के नतीजों को बनाने में घरेलू गवर्नेंस, करप्शन और पॉलिसी चॉइस की भूमिका को कम आंकता है।

निष्कर्ष

आखिर में, डिपेंडेंसी अप्रोच, ऐतिहासिक और ग्लोबल आर्थिक असमानताओं में छिपी एक स्ट्रक्चरल घटना के तौर पर अंडरडेवलपमेंट की जांच करने के लिए एक ज़रूरी नज़रिया देता है। यह मॉडर्नाइज़ेशन थ्योरी की लीनियर सोच को चुनौती देता है, और इस बात पर ज़ोर देता है कि दुनिया के एक हिस्से में डेवलपमेंट दूसरी जगह अंडरडेवलपमेंट को बनाए रख सकता है। बाहरी डिपेंडेंसी और सेंटर-पेरिफेरी डायनामिक्स के महत्व पर ज़ोर देकर, यह अप्रोच ग्लोबल इकोनॉमिक सिस्टम में लगातार असमानताओं को समझने और दूसरी डेवलपमेंट स्ट्रेटेजी बनाने में असरदार बना हुआ है।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT -
HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST
ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905
OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - आधुनिक शहरों की मुख्य विशेषताओं को बताइए।

उत्तर- **आधुनिक शहरों की मुख्य विशेषताएँ**

मॉडर्न शहर अपने एडवांस्ड इंफ्रास्ट्रक्चर, अलग-अलग तरह की आबादी और बदलते सामाजिक-आर्थिक माहौल की वजह से पारंपरिक शहरी बस्तियों से अलग होते हैं। ये शहर आर्थिक विकास, सांस्कृतिक विकास और टेक्नोलॉजिकल इनोवेशन के सेंटर के तौर पर काम करते हैं। मॉडर्न शहरों की खासियतों को मोटे तौर पर कई खास बातों में बताया जा सकता है:

1. एडवांस्ड इंफ्रास्ट्रक्चर और सुविधाएं:

मॉडर्न शहरों की सबसे खासियतों में से एक है उनका अच्छी तरह से डेवलप किया गया इंफ्रास्ट्रक्चर। इसमें सड़कों, हाईवे, रेलवे और पब्लिक ट्रांसपोर्ट सुविधाओं वाला एक ऑर्गनाइज़्ड ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम शामिल है, जो शहर के अंदर आसानी से आने-जाने को पक्का करता है। मॉडर्न शहरों में भरोसेमंद पानी की सप्लाई, बिजली, सीवेज सिस्टम और टेलीकम्युनिकेशन नेटवर्क भी होते हैं। ऐसी सुविधाओं की मौजूदगी से रहने वालों की ज़िंदगी की क्वालिटी बेहतर होती है और इकोनॉमिक एक्टिविटीज़ को सपोर्ट मिलता है। स्काईस्क्रेपर, कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, हॉस्पिटल, स्कूल और मनोरंजन की जगहें आम तौर पर मिल जाती हैं, जो शहर के मॉडर्न आर्किटेक्चरल और अर्बन प्लानिंग स्टैंडर्ड को दिखाती हैं।

2. आर्थिक विविधता और रोज़गार के मौके:

मॉडर्न शहर अलग-अलग तरह के काम करने के तरीकों के साथ आर्थिक हब के तौर पर काम करते हैं। वे इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, मैन्युफैक्चरिंग, सर्विसेज़, ट्रेड, फाइनेंस और टूरिज्म जैसे सेक्टर में रोज़गार के बहुत सारे मौके देते हैं। पुराने ज़माने की बस्तियों के उलट, जहाँ खेती-बाड़ी ही अर्थव्यवस्था का मुख्य हिस्सा थी, मॉडर्न शहर सर्विस-ओरिएंटेड और नॉलेज-ड्रिवन होते हैं। इंडस्ट्रियल ज़ोन, बिज़नेस डिस्ट्रिक्ट और टेक्नोलॉजी पार्क इन शहरों के ज़रूरी हिस्से हैं, जो देश और विदेश दोनों तरह के इन्वेस्टमेंट को खींचते हैं। आर्थिक तेज़ी से इनकम लेवल बढ़ता है और रहने का स्टैंडर्ड बेहतर होता है।

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 46 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

3. कल्चरल और सोशल डायवर्सिटी:

मॉडर्न शहर अलग-अलग कल्चर, भाषाओं, धर्मों और लाइफस्टाइल का मेल हैं। वे अलग-अलग इलाकों और देशों के लोगों को अपनी ओर खींचते हैं, जिससे एक मल्टीकल्चरल समाज बनता है। यह डायवर्सिटी खाने, त्योहारों, कलाओं और सोशल मेलजोल में साफ दिखती है। एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन, आर्ट गैलरी, थिएटर और स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स जैसी सोशल संस्थाएं क्रिएटिविटी और कल्चरल एक्सप्रेशन को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाती हैं। शहरी आबादी अक्सर एक कॉस्मोपॉलिटन सोच दिखाती है, जो इनोवेशन, खुलेपन और सबको साथ लेकर चलने को अपनाती है।

4. टेक्नोलॉजिकल एडवांसमेंट:

मॉडर्न शहरों की पहचान एडवांस्ड टेक्नोलॉजी को अपनाना है। स्मार्ट सिटी, एक ऐसा कॉन्सेप्ट जो आज बड़े पैमाने पर लागू हो रहा है, ट्रैफिक मैनेजमेंट, पब्लिक सेफ्टी, वेस्ट मैनेजमेंट और गवर्नेंस के लिए डिजिटल सिस्टम का इस्तेमाल करता है। इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल सर्विस और बिज़नेस और घरों में ऑटोमेशन एफिशिएंसी और सुविधा में मदद करते हैं। अर्बन मैनेजमेंट में टेक्नोलॉजी को शामिल करने से रिसोर्स का इस्तेमाल बढ़ता है और सस्टेनेबल डेवलपमेंट को बढ़ावा मिलता है।

5. प्लान्ड अर्बन डेवलपमेंट:

पुरानी बस्तियों के उलट, मॉडर्न शहरों को आमतौर पर ज़ोनिंग रेगुलेशन और डेवलपमेंट पॉलिसी के साथ प्लान किया जाता है। अर्बन प्लानिंग में रेजिडेंशियल, कमर्शियल और इंडस्ट्रियल एरिया पर फोकस किया जाता है, जिससे ऑर्गनाइज़्ड ग्रोथ पक्की होती है। एनवायरनमेंट की क्वालिटी को बेहतर बनाने के लिए ग्रीन स्पेस, पार्क और पैदल चलने वालों के लिए ज़ोन बनाए जाते हैं। मॉडर्न शहर एनर्जी बचाने वाली बिल्डिंग, पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बढ़ावा देने और पॉल्यूशन कंट्रोल के तरीकों जैसी कोशिशों के ज़रिए सस्टेनेबिलिटी पर भी ज़ोर देते हैं।

6. सामाजिक चुनौतियाँ और शहरी गतिशीलता:

फ़ायदों के बावजूद, आधुनिक शहरों को भीड़भाड़, ट्रैफ़िक जाम, प्रदूषण और सामाजिक-आर्थिक असमानता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण इलाकों से शहरों की ओर माइग्रेशन से अक्सर अनौपचारिक बस्तियाँ या झुग्गियाँ बन जाती हैं। शहरों को आबादी, टेक्नोलॉजी और ग्लोबल इकॉनमी में होने वाले बदलावों के हिसाब से लगातार ढलने की भी ज़रूरत होती है।

निष्कर्ष:

असल में, मॉडर्न शहर आर्थिक, सांस्कृतिक और टेक्नोलॉजिकल तरक्की के सेंटर हैं। उनका एडवांस्ड इंफ्रास्ट्रक्चर, अलग-अलग तरह की आबादी, प्लान्ड डेवलपमेंट और टेक्नोलॉजी को अपनाना उन्हें पारंपरिक शहरी इलाकों से अलग बनाता है। मौके और बेहतर जीवन स्तर देने के साथ-साथ, वे चुनौतियाँ भी खड़ी करते हैं जिनके लिए सस्टेनेबल शहरी विकास पक्का करने के लिए नई प्लानिंग और गवर्नेंस की ज़रूरत होती है।

प्रश्न - सामाजिक जीवन की समझ के लिए इकोलॉजिकल नज़रिए की क्रिटिकल जांच करें।

जवाब : सोशियोलॉजी और सोशल साइंस में इकोलॉजिकल नज़रिए से इंसानी व्यवहार और सोशल लाइफ को पर्यावरण से गहराई से जुड़ा हुआ माना जाता है। यह तरीका, रॉबर्ट पार्क और बाद में उरी जैसे शुरुआती सोशियोलॉजिस्ट के काम से प्रेरित है। ब्रोंफेनब्रेनर इस बात पर ज़ोर देते हैं कि लोगों और ग्रुप्स को उनके फिजिकल, सोशल और कल्चरल माहौल से अलग करके पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। इकोलॉजिकल थ्योरी बताती है कि सोशल स्ट्रक्चर, इंस्टीट्यूशन और इंटरेक्शन माहौल के हालात के हिसाब से बदलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जीव नेचर में इकोलॉजिकल जगहों के हिसाब से खुद को ढाल लेते हैं।

इकोलॉजिकल नज़रिए का एक खास योगदान **इंसानों और उनके आस-पास के माहौल के बीच आपसी निर्भरता पर इसका फोकस है** । यह मानता है कि सामाजिक जीवन कई तरह के कॉन्टेक्स्ट से बनता है—जो आस-पास के माइक्रोसिस्टम (परिवार, साथी और काम की जगह) से लेकर बड़े मैक्रोसिस्टम (सांस्कृतिक नियम, राजनीतिक संस्थाएं और आर्थिक हालात) तक होते हैं। उदाहरण के लिए, ब्रोंफेनब्रेनर की इकोलॉजिकल सिस्टम थ्योरी इस बात पर ज़ोर देती है कि विकास और सामाजिक व्यवहार इन जुड़े हुए माहौल में लगातार होने वाले इंटरैक्शन का नतीजा होते हैं। इन लेयर्स पर विचार करके, इकोलॉजिकल नज़रिया **सामाजिक घटनाओं की पूरी समझ देता है** , जो एक बदलते हुए कॉन्टेक्स्ट में इंसानी व्यवहार की जटिलता को दिखाता है।

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources